BPSC प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय

अध्यापक भर्ती परीक्षा

हिंदी एवं अंग्रेजी

अनिवार्य पत्र–भाषा भाग – 1 एवं 2

बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित अध्यापक भर्ती परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्न-पत्रों के अनुरूप बिंदुवार व सारगर्भित अध्ययन सामग्री
बिहार में आयोजित होने वाली समस्त प्रतियोगी परीक्षाओं/ परीक्षार्थियों के लिए उपयोगी पुस्तक

संपादक
एन. एन. ओझा

लेखक
क्रॉनिकल संपादकीय मंडल

CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

अनुक्रमणिका

हिंदी

1. हिन्दी की शब्द-संपदा.....1-7
2. ध्वनि एवं वर्ण.....8-16
3. वचन.....17-18
4. कारक.....19-23
5. संधि.....24-31
6. क्रिया.....32-35
7. क्रिया विशेषण.....36-37
8. लिंग.....38-41
9. अव्यय.....42-44
10. विराम चिन्ह.....45-47
11. समास.....48-60
12. उपसर्ग और प्रत्यय.....61-67
13. विलोम शब्द.....68-71
14. मुहावरे का परिचय.....72-76
15. लोकोक्तियां.....77-80
16. रस, छंद और अलंकार.....81-97
17. रचना और रचनाकार.....98-114
18. अपठित गद्यांश.....115-126

अंग्रेजी

1. Fill in the Blanks.....1
2. Synonyms----------6
3. Antonyms---------- 11
4. Selection Of Mis Spelt Word/Correctly Spelt Word---------- 16
5. One Word Substitution---------- 18
6. IDIOMS/PHRASES ---------- 20
7. Unseen Passage---------- 24
8. Model Questions with Explanations--32

हिंदी भाषा

हिन्दी की शब्द-संपदा

भाषा की न्यूनतम इकाई को वाक्य कहा जाता है। वाक्य का निर्माण शब्द से होता है। वह ध्वनि समूह जिसका कोई अर्थ हो, उसे 'शब्द' कहते हैं। किसी भी भाषा में प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को 'शब्द समूह' कहते हैं। हर भाषा का अपना शब्द समूह है। हिन्दी भाषा में व्युत्पत्ति की दृष्टि से चार प्रकार के शब्द हैं- तत्सम, तद्भव, देशी (देशज) और विदेशी (विदेशज)।

तत्सम् शब्द

उन शब्दों को तत्सम् शब्द कहा जाता है, जो किसी भाषा को पूर्ववर्ती परंपरा से प्राप्त हुए हो और दूसरी भाषा में जाने पर भी उनमें कोई परिवर्तन न हुआ हो, ऐसे शब्द हिन्दी में संस्कृत भाषा से ज्यों के त्यों ग्रहण कर लिए गए हैं। तत्सम् शब्द, शब्दों के मेल से बना है 'तत् + सम्' तत् का अर्थ है उसके अर्थात् संस्कृत और सम् का अर्थ है समान। इसलिए वे शब्द जो बिना किसी ध्वनि या अर्थ परिवर्तन के हिन्दी में ज्यों के त्यों ग्रहण कर लिए हैं, वे तत्सम् शब्द कहलाते हैं, जैसे अक्षर तत्सम् है।

हिन्दी निरंतर समृद्ध और विकसित होती भाषा है। हिन्दी की नई शब्दावलियों में भी तत्सम् शब्दों की प्रमुखता है। हिन्दी में तत्सम् शब्दों के साथ-साथ एक ऐसा वर्ग भी है; जिसे अर्धतत्सम् कहा जाता है। उदाहरण के लिए:

तत्सम्	अर्द्धतत्सम्	तत्सम्	अर्द्धतत्सम्
मग्न	मगन	पूर्ण	पूरन
गोत्र	गोत्तर	कृष्ण	किशन

संस्कृत और हिन्दी का दोहरा एवं गहरा संबंध है। संस्कृत से पालि, पालि से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश और अपभ्रंश से हिन्दी का विकास हुआ है। अतएव हिन्दी, संस्कृत भाषा की विकास परंपरा के कारण आई। हिन्दी से संस्कृत का प्रत्यक्ष संबंध भी रहा है। अत: हिन्दी ने सीधे ही संस्कृत की भाषा सम्पदा को स्वीकार कर लिया। यही कारण है कि हिन्दी की अधिकांश शब्दावली संस्कृत के तत्सम् और तद्भव शब्दों से बनी है। तत्सम्, देशज और विदेशी शब्दों का परिचात्मक अध्ययन इस प्रकार है—

तत्सम् एवं तद्भव शब्द

बिना तद्भव शब्द लिए तत्सम् शब्द के मूल स्वरूप का पता नहीं चलता, अत: तद्भव शब्दों के रूपांतरण का परिचय भी तत्सम् शब्दों के साथ-साथ दिया जा रहा है—

तत्सम्	तद्भव	तत्सम्	तद्भव
कंटक	कांटा	क्षार	खार
कपोत	कबूतर	क्षीर	खीर
कपाट	किवाड़	क्षेत्र	खेत
कर्ण	कान	गर्जन	गरज
कुष्ठ	कोढ़	गर्दभ	गधा
क्लेश	कलेश	गर्भिणी	गाभिन
काष्ठ	काठ	गवैया	गायक
कल्लोल	कलोल	क्रेता	गाहक
ग्रंथि	गांठ	चतुर्विंश	चौबीस
गृद्ध	गिद्ध	चक्र	चाक
गोस्वामी	गुसांई	चूर्ण	चूरन
गोधूम	गेहूँ	चिक्कन	चिकना
गोमय	गोबर	छत्रा	छाता
गेंडु (गेंदुक)	गेंद	छाया	छांह
छिद्र	छेद	गो	गाय
छेनी	छेदनी	द्विविरागमन	गौना
जन्म	जनम	गुंफन	गूंथन
जंघा	जांघ	गृह	गेह/घर
जामाता	जमाई	ग्रामीण	गंवार
जिह्वा	जीभ	गंभीर	गहरा
ज्योति	जोति	गोपालक	ग्वाला
ज्येष्ठ	जेठ	घट	घड़ा
झरण	झरना	घटिका	घड़ी
जीर्ण	झीना	घृणा	घिन
दंश	डंक	घृत	घी
दंड	डंडा	अर्क	आक
अक्षय तृतीय	अखतीज	अकार्य	अकाज
अकाज	अक्षत	अच्छत	अंगरक्षक
अंगरक्खा	अक्षर	अच्छर,	आखर
अगम्य	अगम	अम्लिका	इमली
आश्चर्य	अचरज	अष्टावंश	अट्ठारह
अत्रा	आत	अश्रु	आसूं
अद्य	आज	अर्द्ध	आधा
अन्यत	अनत	अग्रवर्ती	अगाड़ी
अनार्य	अनाड़ी	अष्ट	आठ

ध्वनि एवं वर्ण

अभिप्राय

ध्वन्यते इति ध्वनि: अर्थात् व्यक्ति के मौखिक अवयवों से जो आवाज नि:सृत होती है, वह ध्वनि कहलाती है। यह मनुष्य और पशु दोनों की होती है। व्याकरण में मात्र मनुष्य की मुंह से निकली या उच्चारित ध्वनियों पर विचार किया जाता है। मनुष्य द्वारा कार्य करने या न करने या चाहे-अनचाहे स्वत: कुछ ध्वनियाँ नि:सृत होती है। इसमें कुछ सार्थक होती है और कुछ निरर्थक होती हैं।

सार्थक ध्वनि को भाषा या शैली कहा गया। ध्वनि शब्दों की आधारशिला या मूलाधार है; जिसके अभाव में शब्द की कल्पना नहीं की जा सकती है। इसके लिखित रूप को अक्षर या वर्ण कहते हैं। ये वर्ण ध्वनि या भाषा के लघुत्तम रूप होते हैं, जिसके टुकड़े या खण्ड नहीं किये जा सकते, अर्थात् वर्ण उच्चारित भाषा की सबसे छोटी इकाई है। यहाँ हिंदी के वर्ण-स्वर, व्यंजन, उनके भेद, उच्चारण स्थान आदि का अध्ययन किया जा रहा है।

भाषा सार्थक शब्दों का समूह है। सार्थक शब्द का अर्थ है- अर्थसंकेति और परंपरा प्राप्त संकेत व्यवस्था से युक्त शब्द ही सार्थक कहे जाते हैं। भाषा की अनन्त इकाइयाँ वाक्य कहलाती हैं। वाक्य का विश्लेषण करके उसे अनेक पदों में विभक्त किया गया। पद से शब्द बनते हैं। पदों का विश्लेषण करने पर जो मूल अवयव निकलते हैं, उन्हें वर्ण या अक्षर कहते हैं। किसी अर्थ के वाचक शब्द को 'पद' कहते हैं। पदों से जो अर्थ समझे जाते हैं, उन्हें पदार्थ कहते हैं, जैसे- घड़ा, धोती, लोटा इत्यादि शब्दों से जो चीजें समझी जाती हैं, सब पदार्थ हैं। पदार्थ मूर्त ही नहीं अमूर्त भी होते हैं।

वर्ण- भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि है। इस ध्वनि को वर्ण या अक्षर कहते हैं।

वर्णमाला- वर्णों के व्यवस्थित समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं। हिंदी में वर्ण के दो प्रकार हैं- स्वर एवं व्यंजन।

(1) स्वर: स्वर वह मूल ध्वनि है, जिसे विभाजित नहीं किया जा सकता। स्वर के उच्चारण में अन्य वर्णों की सहायता नहीं लेनी पड़ती है।

(2) व्यंजन: व्यंजन वह वर्ण है, जो स्वर की सहायता के बिना नहीं बोले जा सकते।

यहाँ उल्लेखनीय है कि (ऋ) हिंदी में उच्चारण की दृष्टि से स्वर नहीं है, लेकिन लेखन की दृष्टि से 'ऋ' स्वर है। इसी प्रकार 'ऑ' उच्चारण के कारण स्वर के रूप में प्रचलित हो गया।

स्वर- अ आ इ ई उ ऊ (ऋ) ए ऐ ओ औ (ऑ)।

अनुस्वार- अं

विसर्ग- अ:

व्यंजन- क वर्ग	क ख ग घ ङ
च वर्ग	च छ ज झ ञ
ट वर्ग	ट ठ ड ढ ण
त वर्ग	त थ द ध न
प वर्ग	प फ ब भ म
अंत:स्थ	य र ल व
ऊष्म	श ष स ह
संयुक्त व्यंजन	क्ष त्र ज्ञ श्र
द्विगुण व्यंजन	ड़, ढ़

हिन्दी के वर्ण

1. स्वर

स्वर उन वर्णों को कहते हैं, जिनका उच्चारण बिना अवरोध अथवा विघ्न-बाधा के होता है। इनके उच्चारण में दूसरे वर्ण की सहायता नहीं ली जाती, ये सभी स्वतंत्र होते हैं। सामान्यत: इनके उच्चारण में कंठ-तालु का प्रयोग होता है, जीभ होंठ का नहीं। इनके उच्चारण में भीतर से आती हुई वायु मुख से निर्बाध रूप में निकलती है। हिन्दी में 'ग्यारह अक्षर' स्वर कहलाते हैं, क्योंकि इनका उचारण सांस के द्वारा स्वतंत्रता से होता है- 'अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ'।

- **स्वरों का वर्गीकरण**- स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण 'स्वर' कहलाते हैं। परंपरागत रूप से इनकी संख्या 13 मानी गई है। उच्चारण की दृष्टि से इनमें केवल 11 ही स्वर हैं- अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ ऑ।
- **ह्रस्व स्वर**- जिनके उच्चारण में कम समय लगता है और जिनकी उत्पत्ति दूसरे स्वरों से नहीं होती। जैसे - अ इ उ।
- **दीर्घ स्वर**- इन्हें द्विमात्रिक स्वर भी कहते हैं, क्योंकि इनके उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगता है। यानी जिनके उच्चारण में ह्रस्व से अधिक समय लगता है, उसे दीर्घ स्वर कहते हैं। जैसे- आ ई ऊ ए ऐ ओ औ।
- **प्लुत स्वर**- जिन शब्दों के उच्चारण में तिगुना समय लगता है, उसे 'प्लुत स्वर' कहते हैं। इसका कोई चिह्न नहीं होता। इसके लिए (3) का अंक लगाया जाता है। जैसे- (ओ3म्)।

जीभ के प्रयोग के आधार पर

- **अग्र स्वर**- जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का अग्र भाग काम करता है- इ ई ए ऐ।

वचन

शब्द की जिस अवस्था में एक या अनेक वस्तुओं का ज्ञान होता है, वह वचन कहलाती है। जैसे—बालक खेलता है, सीता गाती है, नदियाँ बहती हैं आदि। अत: एक या अनेक वस्तुओं को बताने वाली यही अवस्था वचन कहलाती है। हिन्दी साहित्य में वचनों की संख्या दो मानी गई है-

1. एकवचन 2. बहुवचन।

जिस शब्द के रूप में एक पदार्थ का ज्ञान होता है, वह एकवचन कहलाता है। जिस शब्द रूप से अनेक पदार्थों का ज्ञान होता है, वह बहुवचन कहलाता है।

एकवचन शब्द के उदाहरण—लड़का, लड़की।

बहुवचन शब्द के उदाहरण—लड़के, लड़कियाँ।

संज्ञा के वचन बदलने पर कई बार उनका रूप नहीं बदलता और कई बार बदलता है। जैसे—'बालक' का बहुवचन 'बालक' ही रहेगा और 'लड़का' का बहुवचन 'लड़के' बन गया। अत: जहाँ पर बहुवचन में संज्ञा का रूप नहीं बदलता, वहाँ पर उसके वचन का निर्णय साथ लगी क्रिया की सहायता से हो जाता है। जैसे—'बालक किताब से पढ़ता है' से यह बोध होता है कि यह एकवचन का वाक्य है।

इसी तरह 'बालक किताब पढ़ते हैं,' से यह बोध होता है कि यह बहुवचन का वाक्य है।

बहुवचन का प्रयोग हम निम्न तथ्यों में करते हैं—

(i) **आदर प्रदान करने के लिये:** किसी को आदर प्रदान करने के लिये एकवचन की जगह बहुवचन का उपयोग किया जाता है। जैसे—'गाँधीजी महान् व्यक्तित्व के स्वामी थे' एवं 'रामचंद्र जी आज्ञाकारी पुत्र थे।' इन दोनों वाक्यों में बहुवचन की क्रिया का प्रयोग किया गया है।

(ii) **अधिकार प्रकट करने के लिये:** अधिकार को प्रकट करने के लिये एकवचन की जगह बहुवचन का प्रयोग करते हैं। जैसे—'हमें कहते हो और तुम सुनते तक नहीं।'

(iii) **तुम के लिये:** कई बार 'तू' की जगह 'तुम' का प्रयोग किया जाता है। जैसे—'तुम अभी तो आये हो, क्या अभी चलो जाओगे?'

(iv) **समूहवाचक शब्दों के साथ:** गण, वृंद, प्राण आदि शब्दों के साथ बहुवचन वाक्य प्रयोग किये जाते हैं। जैसे—'उसके गोली लगते ही प्राण निकल गये' तथा 'अध्यापक गण माननीय हैं।' आदि।

(v) **परिणामवाचक संज्ञाओं के साथ:** परिणामवाचक संज्ञाओं के साथ हम बहुवचन का प्रयोग करते हैं। जैसे—बरसों बीत गए। इच्छाएं व आकांक्षाएं कभी नहीं मरतीं।

प्रेम को जतलाने के लिए भी एकवचन का प्रयोग किया जाता है। जैसे—हे प्रभु! मुझे रास्ता दिखाओ, तेरे बिना मेरा और कौन रक्षक?

एकवचन व बहुवचन

एकवचन को बहुवचन में बदलते समय 'आ' (एकवचन) 'ए' (बहुवचन) में बदल जाता है।

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बच्चा	बच्चे	लड़का	लड़के
डिब्बा	डिब्बे	लोटा	लोटे
बेटा	बेटे	घोड़ा	घोड़े
गधा	गधे	कपड़ा	कपड़े
घड़ा	घड़े	केला	केले

जब 'आ' वाले अन्य शब्द एवं तत्सम शब्द हों तो उन पर बहुवचन का कोई प्रभाव नहीं होता। इनके साथ लोग, जन, वृन्द आदि का प्रयोग किया जाता है।

पिता	पिता	योद्धा	योद्धा
ब्रह्मा	ब्रह्मा	दाता	दाता
राजा	राजा	भ्राता	भ्राता
चाचा	चाचा	नाना	नाना
बाबा	बाबा	दादा	दादा
काका	काका	मुखिया	मुखिया
लाला	लाला		

जिन पुल्लिग शब्दों के अंत में अ, इ, ई, ऊ, उ, ए और ओ होता है, वे भी बहुवचन में नहीं बदलते।

मनुष्य	मनुष्य	बालक	बालक
घर	घर	कवि	कवि
हाथी	हाथी	भाई	भाई
साधु	साधु	मुनि	मुनि
स्वामी	स्वामी	कर्मचारी	कर्मचारी
हिंदू	हिंदू	डाकू	डाकू
चौबे	चौबे	भालू	भालू

ह्रस्व अकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन में 'अ' का 'ए' हो जाता है। जैसे-

कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप के द्वारा वाक्य के दूसरे शब्दों से संबंध जाना जाता है, उसे 'कारक' कहा जाता है। कारक के छः भेद माने गए हैं—

कर्त्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान एवं अधिकरण। कुछ विद्वान 'संबंध' और 'संबोधन' को कारक के अन्य दो भेद मानते हैं। कारक के प्रकारों को निम्न ढंग से समझा जा सकता है-

1.	कर्त्ता कारक	(ने)
2.	कर्म कारक	(को)
3.	करण कारक	(से द्वारा)
4.	संप्रदान कारक	(के लिए)
5.	अपादान कारक	(से, पृथक्)
6.	संबंध कारक	(का, के, की)
7.	अधिकरण कारक	(में, पर)
8.	संबोधन कारक	(हे!, अरे!)

वास्तव में, कारक का कार्य संज्ञा और क्रिया के बीच संबंध को बताना है। 'राजनारायण की कमीज फट गई।' इस वाक्य में परसर्ग 'की' 'राजनारायण' और 'कमीज' दो संज्ञाओं के बीच के संबंध को बता रहा है। कारकों के सभी आठ भेदों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

(1) कर्त्ता कारक

जिस रूप से क्रिया या कार्य करने का बोध होता है, वह 'कर्त्ता कारक' कहलाता है। इस कारक की विभक्ति 'ने' है। उदाहरण—

1. राम ने रावण को मारा।
2. अनुष्का ने बांसुरी बजाई।
3. जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' महाकाव्य लिखा।

कर्त्ता कारक की 'ने' विभक्ति का प्रयोग आमतौर पर भूतकाल में ही होता है। अकर्मक क्रिया के साथ अर्थात् कर्त्ता के साथ 'ने' नहीं लगता, उदाहरणार्थ—सुमित्रा जाती है। वह खाती है।

(2) कर्म कारक

क्रिया के कार्य का फल जिस कारक पर पड़ता है, वही कारक 'कर्म कारक' कहलाता है। इस कारक की अभिव्यक्ति 'को' है। उदाहरण के लिए—

(i) कृष्ण ने राजहंस को मारा।
(ii) राजसिंह ने अवधेश को गालियां दीं।

कर्मकारक में कभी-कभी विभक्ति चिह्न 'को' लुप्त रहता है; जैसे—मैंने उसे देखा।

(3) करण कारक

जिस रूप से क्रिया के साधन का बोध होता हो अथवा जिसकी सहायता से कार्य पूर्ण होता हो, वह 'करण कारक' कहलाता है। इसकी अभिव्यक्ति 'से' है। उदाहरण के लिए—

(i) कृष्ण ने कंस को हाथों से मारा।
(ii) जयसिंह ने गुलजार को डंडों से पीटा।

(4) संप्रदान कारक

कर्त्ता जिसके लिए कुछ कार्य करे, उसे प्रकट करने वाला कारक 'संप्रदान कारक' कहलाता है। इसकी अभिव्यक्ति 'के लिए' है। उदाहरण के लिए—

(i) कर्ण ने दुर्योधन के लिए अर्जुन को मारने की प्रतिज्ञा ली।
(ii) नूतन ब्राह्मण के लिए भोजन पकाती है।

(5) अपादान कारक

संज्ञा के जिस रूप से एक वस्तु का दूसरे से अलग होना या तुलना करना पाया जाए, तो ऐसे कारक को 'अपादान कारक' कहते हैं। इस कारक की अभिव्यक्ति 'से' 'पृथक होना' है। उदाहरणार्थ—

(i) सलीम छत से कूद गया।
(ii) राम, भरत से ज्यादा दयालु है।

(6) संबंध कारक

जिस रूप से किसी वस्तु का दूसरी वस्तु से कोई संबंध प्रकट हो, तो वह कारक 'संबंध कारक' है। उदाहरण के लिए—

(i) यह सांसद महोदय का निवास स्थान है।
(ii) उसके पिता बहुत बड़े जमींदार हैं।
(iii) रंजना, ऋतु की छोटी बहन है।

(7) अधिकरण कारक

जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध होता हो, वह कारक 'अधिकरण कारक' कहलाता है। इसकी अभिव्यक्ति 'में, पर' है। उदाहरण के लिए—

(i) इस जंगल में बहुत जानवर हैं।
(ii) तेरे दर पे आया हूं।
(iii) मुझ पर कृपा करो, मईया।

(8) संबोधन कारक

यह अंतिम कारक है। जिस कारक में किसी को बुलाने या सचेत करने का भाव प्रकट होता हो उसे 'संबोधन' कारक कहते हैं। इस

संधि

अर्थ एवं परिभाषा

अंग्रेजी में संगम को 'juncture' कहते हैं और हिंदी में संधि या संगम कहा जाता है। दूसरे शब्दों में योजक भी कहा जाता है।

परिभाषा– वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसको संधि कहते हैं।

संधि शब्द संस्कृत का शब्द है। संधि में जब दो अक्षर या वर्ण मिलते हैं, तब उनकी मिलावट से विकार उत्पन्न होता है। वर्णों की यह विकारजन्य स्थिति 'संधि' है। **जैसे–** जगत् + नाथ = जगन्नाथ, देव+ आलय =देवालय।

संधि-विच्छेद

- संधि के नियमों द्वारा मिले वर्णों को फिर मूल अवस्था में ले आने को संधि विच्छेद कहते हैं।
- इन शब्दों के खंडों में पहले खंड का अंत्याक्षर दूसरे खंड के आरंभिक से मिल गया है और दोनों के मेल से एक भिन्न अक्षर बन गया है। अक्षर के इस प्रकार मेल को संधि कहते हैं।

  राम + अवतार = रामावतार – अ + अ = आ

  ईश्वर + इच्छा = ईश्वरेच्छा – अ + इ = ए

  भानु + उदय = भानूदय – उ + उ = ऊ
- अ + अ मिलकर आ, अ + इ मिलकर ए और उ + उ मिलकर ऊ हुआ है। ये सब अक्षर स्वर हैं, इसलिये इनके मेल को स्वर संधि कहते हैं।

  वाक् + ईश = वागीश – क् + ई = गी

  जगत् + ईश = जगदीश – त् + ई = दी
- अंत्य व्यंजनों के साथ स्वर अथवा व्यंजन मिले हैं और अनेक स्थानों में भिन्न अक्षर हो गए हैं। जिस संधि में व्यंजन के साथ स्वर अथवा व्यंजन मिलता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

  नि: + आशा = निराशा (: + आ = रा)

  नि: + फल = निष्फल (: + फ = ष्फ)
- विसर्ग के साथ स्वर अथवा व्यंजन मिले हैं और उनके स्थान में भिन्न अक्षर आया है। विसर्ग के साथ स्वर अथवा व्यंजन के मेल को विसर्ग संधि कहते हैं।

संधि के भेद

- संधि के तीन भेद माने जाते हैं-(1) स्वर संधि, (2) व्यंजन संधि, (3) विसर्ग संधि।

स्वर संधि

- दो स्वरों के मेल से जो विकार होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं। जैसे- महा + आत्मा = महात्मा।
- स्वर संधि के पांच भेद माने गये हैं-(1) दीर्घ संधि, (2) गुण संधि, (3) वृद्धि संधि, (4) यण् संधि, (5) अयादि संधि।

1. **दीर्घ संधि–** ह्रस्व या दीर्घ 'अ, इ, उ के पश्चात् क्रमश: ह्रस्व या दीर्घ 'अ, इ, उ, स्वर आएं, तो दोनों को मिलाकर दीर्घ 'आ, ई, ऊ हो जाते हैं। जैसे-

   अ + अ = आ, धन + अर्थी = धनार्थी, वेद + अंत = वेदांत, शरण + अर्थी = शरणार्थी, सत्य + अर्थी = सत्यार्थी, स्वर + अर्थी = स्वार्थी, धर्म + अर्थ= धर्मार्थ, शब्द + अर्थ = शब्दार्थ, देव + अर्चन= देवार्चन।

- **अ + आ= आ–** परम + आत्मा= परमात्मा, नव + आगत= नवागत, हिम + आलय= हिमालय, देव + आलय= देवालय, सत्य + आग्रह= सत्याग्राह, परम + आनंद= परमानंद, शरण + अर्थी = शरणार्थी, पुस्तक + आलय= पुस्तकालय।
- **आ + आ= आ– विद्या + आलय=** विद्यालय, महा + आनंद= महानंद, गदा + आघात= गदाघात, महा + आत्मा= महात्मा।
- **आ + अ= आ–** विद्या + अर्थी= विद्यार्थी, परीक्षा + अर्थी = परीक्षार्थी, रेखा + अंश = रेखांश, कदा + अपि= कदापि, दीक्षा + अंत= दीक्षांत।
- **इ + इ=** ई, उदा.– मुनि + इंद्र= मुनींद्र, रवि+इंद्र = रवीन्द्र।
- **इ + ई=** ई, उदा.– गिरि + ईश= गिरीश, वारि + ईश= वारीश।
- **ई + इ=** ई, उदा.– मही + इंद्र= महीन्द्र, योगी + इंद्र = योगीन्द्र।
- **ई + ई=** ई, उदा.– नदी + ईश= नदीश, रजनी + ईश = रजनीश।
- **उ + उ= ऊ,** उदा.– गुरु + उपदेश= गुरुपदेश भानु + उदय = भानूदय, विधू + उदय = विधूदय, सू + उक्ति= सूक्ति।
- **उ + ऊ= ऊ,** उदा.– धातु + उष्मा= धातूष्मा, साधु + ऊर्जा = साधूर्जा।
- **ऊ + उ= ऊ–** उदा.– वधू + उत्सव = वधूत्सव, वधू + उपकार = वधूपकार
- **ऊ + ऊ = ऊ,** उदा.– भू + ऊष्मा= भूष्मा।
- **रु + रु = रू,** उदा.– मातृ + तृण = मातृण।

2. **गुण संधि–** अ तथा आ के बाद इ, ई, उ, ऊ तथा ऋ आने पर क्रमश: ए, ओ तथा अंतस्थ 'अर' होते हैं। इस विकार को गुण संधि कहते है।

- **अ + इ = ए,** उदा. देव + इन्द्र= देवेन्द्र, शुभ + इच्छा= शुभेच्छा, **सुर + इंद्र=** सुरेन्द्र, सत्य + इंद्र= सत्येंद्र, नर + इंद्र= नरेंद्र।
- **अ + ई= ए,** उदा.– परम + ईश्वर= परमेश्वर, गण + ईश= गणेश।

क्रिया

अर्थ एवं परिभाषा

'क्रिया' का अर्थ कार्य करना होता है। जिन शब्दों या पदों से यह पता चले कि कोई कार्य हो रहा है, किया जा रहा है, उसे क्रिया कहते हैं। व्याकरण में कोई भी वाक्य क्रिया के बिना पूरा नहीं होता है। इसे भी व्याकरण का एक विकारी शब्द माना जाता है।

क्रिया की प्रधानता वाक्य में होती है। उसी वाक्य में सम्पूर्ण शब्द जगत समाया है। मूल रूप से क्रिया पद विशेष्य है, शेष सब विशेषण। तात्पर्य यह है कि ''जिस शब्द से किसी कार्य का होना या करना समझा जाता है, उसे क्रिया कहते हैं।'' जैसे- खाना, पीना, पढ़ना, सोना, रहना इत्यादि से क्रिया का बोध होता है। क्रिया के रूप लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार बदलते हैं, क्रिया एक विकारी शब्द भी है।

क्रिया तीन प्रकार के शब्दों से बनती है-

(1) धातु, (2) संज्ञा, (3) विशेषता।

धातु से ही क्रिया का निर्माण होता है। जब धातु में 'ना' लगा दी जाती है, तब क्रिया बन जाती है। धातु का अर्थ है क्रिया का मूलरूप। इसलिए क्रिया के सभी रूपों में 'धातु' उपस्थित रहती है।

जैसे- पढ़ना क्रिया में 'पढ़' धातु
देखना क्रिया में 'देख' धातु
चलना क्रिया में 'चल' धातु
खाना क्रिया में 'खा' धातु

कहने का तात्पर्य है कि धातु में 'ना' प्रत्यय जोड़कर क्रिया का निर्माण होता है। धातु के अलावा संज्ञा और विशेषण से भी क्रिया बनती है। जैसे- संज्ञा से- हथियाना = हाथ + आ + ना, विशेषण से- चिकनाना = चिकना + आ + ना।

रचना की दृष्टि से क्रियायें दो प्रकार की होती हैं- (1) मूल, (2) यौगिक।

(1) मूल क्रिया- ये क्रियाएं धातु से बनती हैं और स्वतन्त्र होती हैं, साथ ही किसी अन्य शब्द पर आश्रित नहीं रहती; जैसे- खाना, खाया, जा, खा, रह, पी, देख आदि।

(2) यौगिक क्रियायें- यह क्रिया एक से अधिक तत्वों से मिलकर बनती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि मूल धातु में प्रत्यय लगाकर संज्ञा और विशेषण में प्रत्यय लगाकर यौगिक क्रिया बनती है। जैसे- पीना सें पिलाना, पढ़ना से पढ़वाना आदि।

यौगिक क्रियायें चार प्रकार की होती हैं-

(1) प्रेरणार्थक क्रियायें, (2) संयुक्त क्रियायें, (3) अनुकरणात्मक क्रियायें, (4) नाम धातु क्रियायें।

1. प्रेरणार्थक क्रियायें- जब कर्त्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, वे प्रेरणार्थक क्रियायें कहलाती हैं। जैसे-

करना से कराना, उठना से उठाना
चलना से चलाना, देना से दिलाना

प्रेरणार्थक क्रियाओं में दो-दो प्रेरणार्थक रूप भी पाए जाते हैं-

सोना- सुलाना, सुलवाना। पीना-पिलाना, पिलवाना। उड़ना-उड़वाना। लिखना-लिखाना, लिखवाना।

2. संयुक्त क्रिया- जो क्रिया दो या दो से अधिक धातुओं के संयोग से बनती है, संयुक्त क्रिया कहलाती है। जैसे- उठना-बैठना, चलना-चलाना, चलना-फिरना, खाना-पीना, खा-लेना, चलना-चल देना इत्यादि।

3. अनुकरणात्क क्रियाएं- किसी कल्पित ध्वनि या वास्तविक ध्वनि के अनुकरण में हम जो क्रिया बनाते हैं, अनुकरणात्मक क्रिया कहलाती है।

जैसे- थरथर से थरथराना, खटखट से खटखटाना इत्यादि।

4. नाम धातु क्रियायें- संज्ञा या विशेषण से बनने वाली क्रिया को नाम धातु क्रिया कहते हैं। जैसे- बात से बतियाना, लात से लतियाना, अपना से अपनाना, गरम से गरमाना इत्यादि।

क्रिया के भेद : कर्म की दृष्टि से क्रिया के दो भेद हैं-

(1) सकर्मक क्रिया, (2) अकर्मक क्रिया।

(1) सकर्मक क्रिया- कर्म के साथ आने वाली क्रिया को सकर्मक क्रिया कहते हैं।

उदाहरण- वह पुस्तक पढ़ रहा है, नौकर पानी भरता है।

कहने का तात्पर्य है कि जिस क्रिया के व्यापार का संचालन कर्त्ता से हो, पर जिसका फल कर्म पर पड़े, सकर्मक क्रिया है। जैसे-

1. राम फल खाता है (खाना क्रिया के साथ कर्म फल है)।
2. श्याम आम खाता है (खाना क्रिया के साथ कर्म आम है)।

(2) अकर्मक क्रिया- जिन क्रियाओं के प्रयोग में 'कर्म' की आवश्यकता नहीं होती, उन्हें 'अकर्मक क्रिया' कहते हैं। तात्पर्य यह है कि इन क्रियाओं का फल कर्म पर न पड़कर कर्त्ता पर पड़ता है। जैसे- वह खेल रहा है, कुआं भरता है। मोहन हंसता है। (कर्म का अभाव है और हंसता है- जो क्रिया है, उसका फल मोहन पर पड़ता हैं)।

क्रिया के कुछ अन्य भेद भी हैं-

1. सहायक क्रिया- सहायक क्रिया मुख्य क्रिया के रूप को पूरा करने में सहायक होती है। कभी क्रिया और कभी एक से अधिक क्रियायें भी सहायक क्रियायें होती हैं। उदाहरण- वह जाता है, मैं घर जाता हूं, वे हंस रहे थे, मैंने पढ़ा था। इनमें जाना, हंसना, पढ़ना मुख्य क्रियाएं हैं- यहां क्रिया के अर्थ में प्रधनता है।

क्रिया विशेषण

अर्थ- जिन शब्दों से क्रिया की विशेषता का पता चलता है, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे- वह धीरे-धीरे चलता है। इस वाक्य में 'चलता' क्रिया है और 'धीरे-धीरे' उसकी विशेषता।

यानी जिस शब्द से क्रिया की विशेषता का ज्ञान होता है, उसे क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे- यहाँ, वहां, अब, तक, जल्दी, अभी आदि।

वर्गीकरण- क्रिया विशेषणों का वर्गीकरण तीन आधारों पर किया जाता है- (1) प्रयोग, (2) रूप, (3) अर्थ।

प्रयोग के आधार पर-

प्रयोग के आधार पर क्रिया विशेषण तीन प्रकार के होते हैं।- (1) साधारण, (2) संयोजक, (3) अनुबद्ध।

(1) साधारण क्रिया विशेषण- जिन क्रिया विशेषणों का प्रयोग किसी वाक्य में स्वतन्त्र होता है, उन्हें साधारण क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे- हाय! अब मैं क्या करूँ। बेटा, जल्दी आओ। अरे! वह बैल कहाँ गया?

(2) संयोजक क्रिया विशेषण- जिन क्रिया विशेषणों का सम्बन्ध किसी उपवाक्यों के साथ रहता है, उन्हें संयोजक क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे- जहाँ अभी यह शहर है, वहाँ किसी समय जंगल था। मैंने एक आदमी देखा जो छोटा था। उसने वह पुस्तकालय खरीद लिया है, जो मेरा था।

(3) अनुबद्ध क्रिया विशेषण- जिनका प्रयोग निश्चय के लिए किसी भी शब्द-भेद के साथ हो, उसे अनुबद्ध क्रिया निशेषण कहते हैं। जैसे- यह तो किसी ने अच्छा ही किया है। मैंने उसे देखा तक नहीं। बस! आपके आने भर की देर है।

रूप के आधार पर-

रूप के आधार पर क्रिया विशेषण तीन प्रकार के होते हैं- (1) मूल, (2) यौगिक, (3) स्थानीय।

(1) मूल क्रिया विशेषण- जो क्रिया विशेषण दूसरे शब्दों के मेल से नहीं बनते, उन्हें मूल क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे- फिर, दूर, नहीं, ठीक, अचानक आदि।

(2) यौगिक क्रिया विशेषण- जो क्रिया विशेषण दूसरे शब्दों में प्रत्यय या पद जोड़ने से बनते हैं, उन्हें यौगिक क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे- किससे, जिससे, यहाँ तक, झट से, कल से, चुपके से, भूल से, देखते हुए आदि।

संज्ञा से- रात भर, मन से।

सर्वनाम से- जहाँ, जिससे।

विशेषण से- चुपके, धीरे।

अव्यय से- झट से, यहाँ तक।

धातु से- देखने आने।

(3) स्थानीय क्रिया विशेषण- अन्य शब्द भेद, जो बिना किसी रूपांतर के किसी विशेष स्थान पर आते हैं, उन्हें स्थानीय क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे- वह अपना दिमाग पढ़ेगा। तुम दौड़कर चलते हो।

अर्थ के आधार पर-

इस आधार पर क्रिया विशेषण के चार भेद होते हैं- (1) स्थानवाचक, (2) कालवाचक, (3) परिमाणवाचक, (4) रीतिवाचक।

(1) स्थानवाचक क्रिया विशेषण- जो अविकारी शब्द किसी क्रिया के संपादित होने के स्थान का बोध कराते हैं, उन्हें स्थान वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे- यहाँ, वहाँ, कहाँ, जहाँ, सामने, नीचे, ऊपर, आगे, पीछे, बाहर, भीतर। उदाहरण- शिखा यहाँ चल रही हैं। इस वाक्य में 'यहाँ', चल क्रिया के व्यापार स्थान का बोध करा रही है।

स्थानवाचक क्रिया विशेषण दो प्रकार का होता है-

दिशावाचक- इधर, उधर, किधर, जिधर, बायें, दाहिने आदि।

स्थितिवाचक- यहाँ, वहाँ, साथ, बाहर, भीतर आदि।

(2) कालवाचक क्रिया विशेषण- जो अविकारी शब्द किसी क्रिया के होने का समय बतलाते हैं। उन्हें काल वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। यह तीन प्रकार के हैं-

समयवाचक- आज, कल, जब, पहले, तुरन्त, अभी आदि।

अवधिवाचक- नित्य, आजकल, सदा, लगातार, दिनभर आदि।

पौनःपुण्य (बार-बार) वाचक- प्रतिदिन कई बार, हर बार आदि।

(3) परिमाणवाचक क्रिया विशेषण- जो अविकारी शब्द किसी क्रिया के परिमाण अथवा निश्चित संख्या का बोध कराते हैं। उन्हे परिमाणवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे- परसों, पहले, पीछे, कभी, अब तक, अभी-अभी, बार-बार आदि।

परिमाणवाचक क्रिया विशेषण कई प्रकार के होते हैं-

श्रेणीबोधक- थोड़ा-थोड़ा, क्रमशः आदि।

तुलनाबोधक- इतना, उतना, कम, अधिक आदि।

न्यूनताबोधक- कुछ, लगभग, थोड़ा, प्रायः आदि।

पर्याप्तबोधक- केवल, बस, काफी, ठीक आदि।

अधिकताबोधक- बड़ा, अत्यन्त, भारी, बहुत आदि।

(4) रीतिवाचक क्रिया विशेषण- जो शब्द किसी क्रिया के करने के तरीके या रीति का बोध कराये, उसे रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे- सौरभ द्वारा साझेदारी की रीति को तोड़ने की एवज में सुनील ने उससे नुकसान का भरपाई किया। इसमें

लिंग

अर्थ एवं परिभाषा

'लिंग' संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ हैं- 'निशान'। जिस शब्द से व्यक्ति या पशु-पक्षियों का नर या मादा होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं। इससे ज्ञात होता है कि वह पुरुष (नर) जाति का है या स्त्री (मादा) जाति का।

परिभाषा- "संज्ञा के जिस रूप से व्यक्ति या वस्तु की जाति (स्त्री या पुरुष) के भेद का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं।" "शब्द के जिस रूप से किसी व्यक्ति, पशु-पक्षी या वस्तु आदि के पुरुष अथवा स्त्री (नर या मादा) जाति के होने का ज्ञान होता है, उसे लिंग कहते हैं।"

- संस्कृत में नपुंसक लिंग में अप्राणीवाचक संज्ञाओं को रखा जाता है।
- कुछ पुल्लिंग शब्दों के पर्यायवाची स्त्रीलिंग होते हैं और कुछ स्त्रीलिंग के पर्यायवाची पुल्लिंग होते हैं। जैसे- 'पुस्तक' को स्त्रीलिंग कहते हैं और ग्रन्थ को पुल्लिंग।
- लिंग के द्वारा संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि शब्दों की जाति (स्त्री-पुरुष/नर-मादा) का बोध होता है।

लिंग के भेद

हिन्दी में लिंग के निर्णय का आधार संस्कृत के नियम हैं। हिन्दी में लिंग दो प्रकार के होते हैं- पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग। जबकि संस्कृत में तीसरा लिंग भी है, जिसे नपुंसकलिंग कहते हैं।

1. **पुल्लिंग**- जिस संज्ञा शब्द से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं। जैसे- पिता, राजा, कुत्ता, लड़का, बकरा आदि।
2. **स्त्रीलिंग**- जिस संज्ञा शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं। जैसे- माता, रानी, कुतिया, लड़की, बकरी आदि।

1. पुल्लिंग

पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्दों को पुल्लिंग कहते हैं। जैसे- 'दीपक खाना खाता है।' इसमें दीपक एक लड़का है, जो पुरुष जाति का बोध करता है।

- **पुल्लिंग शब्द**- अकरांत, आकारांत शब्द प्रायः पुल्लिंग होते हैं। जैसे-चीता, घोड़ा, कपड़ा, गधा, राम, सूर्य, क्रोध आदि।
- वे भाववाचक संज्ञाएँ जिनके अंत में त्व, व, य होता है, वे प्रायः पुल्लिंग होती हैं। जैसे- गौरव, शौर्य आदि।
- जिन शब्दों के अंत में पन, आव, खाना जुड़े होते हैं, वे भी प्रायः पुल्लिंग होते हैं। जैसे- बचपन, भुलावा, पागलखाना आदि। क्रियार्थक संज्ञाओं में भी पुल्लिंग होता है- सोना, गाना, खाना, जाना आदि।
- **देशों, समुद्रों और पर्वतों के नाम**- नेपाल, हिमालय, लाल, समुद्र, काला सागर
- **ग्रहों के नाम**- वृहस्पति, शनि, शुक्र, सूर्य, बुध, चंद्र
- **समय के विभागों के नाम**- माह, दिन, सप्ताह, वर्ष, पल, पाख
- **धातुओं के नाम**- पीतल, लोहा, सोना, ताँबा, काँसा
- **रत्नों के नाम**- पन्ना, नीलम, मानिक, मोती, हीरा, मूँगा
- **पेड़ों के नाम**- कदंब, जामुन, आम, केला, पीपल, बड़
- **अनाजों के नाम**- चावल, गेहूँ, बाजरा, मटर, चना
- **द्रव पदार्थों के नाम**- तेल, पानी, घी, दही, दूध
- **अक्षरों के नाम**- अनुस्वार, विसर्ग, क, ह, अ, आ आदि।

संस्कृत पुल्लिंग

1. जिन संज्ञाओं के अंत में 'आर', 'आय' हो, जैसे- विकास, संसार, अध्याय, उपाय आदि।
2. जिन रचनाओं के अंत में 'ज' या 'द' हो, जैसे- जलज, सुखद, धनद आदि।
3. 'त' प्रत्यांत संज्ञाएँ, जैसे -गीत, चरित, लिखित, गणित आदि।
4. जिनके अंत में 'त्र' हो, जैसे- चरित्र, नेत्र, क्षेत्र आदि।
5. जिन भाववाचक संज्ञाओं के अंत में 'त्व, त्य, व अथवा 'य' होता है, जैसे- कृत्य, लाघव, सौंदर्य, माधुर्य, बहुत्व, नृत्य आदि।

अँग्रेजी पुल्लिंग

- यहाँ पर अकारांत संज्ञा पुल्लिंग होती है। जैसे- ऑयल, इंजिन, एक्सप्रेस, इंजेक्शन, काउण्टर, कॉलर, चॉकलेट, टायर, टॉउनहॉल, टिकट, डिविजन, थर्मस, पासपोर्ट, पेंशन, पोस्टर आदि।

उर्दू पुल्लिंग

1. जिनके अंत में 'आब' होता है। जैसे- जुलाब, तेजाब, जवाब।
2. जिनके अंत में 'आल' या 'आन' होता है। जैसे- सवाल, हाल, समान।
- अर्थ के अनुसार अप्राणिवाचक संज्ञाओं के लिंग जानने के लिये कुछ नियम दिये जाते हैं।

2. स्त्रीलिंग

स्त्री जाति का बोध कराने वाले संज्ञा शब्दों को स्त्रीलिंग कहते

अंग्रेजी भाषा

Fill in the Blanks

In these questions sentences are given with blanks to be filled in with an appropriate word (s). Four alternatives are suggested for each question. Choose the correct alternative out of the four alternatives.

1. The flash of the torch.....a cobra.

(a) exposed (b) displayed
(c) disclosed (d) revealed

Ans: (d) The word Reveal (verb) means: to show something that previously could not be seen : to make something known.

2. He.....himself a stiff drink before making his statement to the plice officer.

(a) threw (b) poured
(c) filled (d) sipped

Ans: (d) The word sip (verb) means : to drin something taking a very small amount each time.

3. It was his....that led him to penury.

(a) flamboyance (b) arrogance
(c) extravagance (d) ebullience

Ans: (c) The word Extravagance (Noun) means : the act of spending more money than you can afford or than is necessary
The word Penury (Noun) means: the state of being very poor; poverty

4. Gita was known to be a ------ so nobody entrusted any important work to her.

(a) joker (b) worker
(c) shocker (d) shirker

Ans: (d) The word shirker (Noun) means : one who avoids doing something one should do, especially one is too lazy.

5. The statue was so.....that people stared at it horror.

(a) grotesque (b) exquisite
(c) beatific (d) shirker

Ans: (a) The word Grotesque (Adjective) means : bizarre : absurd ; strange in a way that is unpleasant; extremely ugly.

6. He was caught red-handed and could not.....the charges.

(a) refute (b) refuse
(c) rebuke (d) revoke

Ans: (a) The word Refute (Verb) means : to prove that something is wrong : rebut : deny.

7. Unhappy about the treatment meted out to her. Shanti.....demanded justice.

(a) sumptuously (b) voraciously
(c) spasmodically (d) vociferously

Ans: (d) The word **Vociferously (Adverb)** means : expressing your opinions or feelings in a loud and condident way ; stridently.

8. The police sprayed tear gas.....on the prote-sters.

(a) indirectly (b) intensively
(c) indifferently (d) indiscriminately

Ans: (d) The word **Indiscriminately (Adverb)** means : done without thought ; acting without careful judgement.

9. We are happy to.....the receipt of your order No 4071 dated 13.3.96.

(a) admit (b) accept
(c) acknowledge (d) respond

Ans: (c) The word **Acknowledge (verb)** means : to tell somebody that you have received something that they sent to you

10. All jobs are respectable.....of their nature.

(a) irrelevant (b) immaterial
(c) irresponsible (d) irrespective

Ans: (d) The word irrespective of (Preposition) means : without considering something or being influenced by it ; regardless of

11. Nadheeka was musing.....memories of the past.

(a) over (b) about
(c) on (d) from

Ans: (c) The word Muse means : to think carefully about something for a time : ponder

12. The lame boy tried to climb up the staircase without..... Help.

(a) little (b) any
(c) some (d) many

Ans: (b) Without any help = with no help

13. Each school has its own set of rules.....all good pupils should follow them.

(a) but (b) or
(c) so (d) and

Ans: (d) Independent clases are joined by **and** more over there is no contrast.

14. On my return form a long holiday, I had to ..... with a lot of work.

(a) catch on (b) catch up
(c) make up (d) take up

Ans: (b) catch up means : to spend extratime Doing something because you have not done it earlier.

15. Only one of the boys.....not done the home-work given yesterday.

(a) findings (b) outcome
(c) break through (d) resolutions

Ans: (b) Here, subject (only one of the boys) is singular, that will agree with a singular verb.

16. Hopes of a settlement depends on the.....of the dis-cussion.

(a) findings (b) outcome
(c) break through (d) resolutions

Ans: (b) The word **outcome** (Noun) menas : the result or effect of an action or event.

SYNONYMS

In these questions. Out of the four alternatives. choose the one which best expresses the meaning of the word given in **bold.**

1. OBNOXIOUS

(a) Depressing (b) Disgusting
(c) Arrogant (d) Flithy

Ans: (b) The word **Obnoxious (Adjective)** means : extremely unpleasant, offensive ; disgusting.

2. COVENANT

(a) Case (b) Coupon
(c) Contract (d) Settlement

Ans: (c) The word **Covenant (Noun)** means : a promise to somebody or a legal agreement; contract.

3. DEFERENCE

(a) Indifference (b) Sympathy
(c) Respect (d) Flattery

Ans: (c) The word **Deference (Noun)** means : behavious that shows that you respect somebody/something; respect.

4. ABROGATE

(a) Repeal (b) Destroy
(c) delay (d) Dismiss

Ans: (a) The word **Abrogate (Verb)** means ; to officially end a law, an agreement etc. repeal.

5. INTREPID

(a) Ambitious (b) Determined
(c) Talkative (d) Fearless

Ans: (d) The word **Intrepid (Adjective)** menas : very brave, not afraid of danger or difficulties fearless.

6. Grandeur

(a) magnificence (b) admiration
(c) happiness (d) awe

Ans: (a) Grandeur is the quality in something, for example in a building or in scenery, which makes it seem impressive and often elegant. Someone's **grandeur** is the great importance and social status that they have, or think they have.
If you say that something or someone is **Magnificent.** you mean that you think they are extremely good, beautiful, or impressive.
I shall never forget the magnificence of the swiss mountains and the beauty of the lakes.

7. Inception

(a) initiative (b) beginning
(c) initial (d) origin

Ans: (d) The **inception** of an institution or activity is the start of it.
For example.
Since its inception the company has produced 53 different designs.
There are two words **origin** and **beginning** worthy to be considered as synonyms.
Now,
The **beginning** of an event or process is the first part of it. This shows that the word **beginning** is less preferable. So we must choose **origin** as the synonym.

8. Colossal

(a) famous (b) vigorous
(c) energetic (d) origin

Ans: (d) If you describe something as **colossal,** you are emphasizing that it is very large.
For example,
There has been a colossal waste of public money.
Something that is **enormous** is extremely large in size or amount.
You can use **enormous** to emphasize the great degree or extent of something.
So, **colossal** and **enormous** are synonymous.

9. Paradox

(a) Paradise (b) question
(c) puzzle (d) challenge

Ans: (c) You describe a situation as a **paradox** when it involves two or more facts or qualities which seem to contradict each other.
A **paradox** is a statement in which it seems that if one part of it is true, the other part of it can't be true. So **puzzle** is the correct synonym of **paradox.**

10. Proliferate

(a) proliterate (b) prohibit
(c) stipulate (d) reproduce

Ans: (d) If things **proliferate,** theyincrease in number very quickly
For example,
In recent years commercial, cultural, travel and other contacts have proliferated between Taiwan and China. So **reproduce** is the appropriate synonym of **proliferate.**

11. CENSURE

(a) Criticize (b) appreciate
(c) blame (d) abuse

Ans: (a) The word **Censure (Verb)** means : the criticise somebody severely and often pubicy; rebuke; reprimand.
Look at the sentance :
He was censured for leaking information to the press.

12. DILIGENT

(a) industrious (b) indifferent
(c) intelligent (d) energetic

Ans: (b) The word **Dilligent (Adjective)** means : hard working ; industrious ; showing care and effort in your work.

ANTONYMS

In these questions. Choose the word opposite in meaning to the word given in **bold.**

1. OSTRACISE

(a) Amuse (b) Welcome
(c) Entertain (d) Host

Ans: (b) The word **Ostracise (verb)** means : to refuse to let somebody be a member of a social group: to refuse to meet or talk to somebody ; shun

2. DENSE

(a) Scarce (b) Slim
(c) Sparse (d) Lean

Ans: (c) The words Dense and Sparse (only present in small amounts or numbers and often spread over a large areal) are antonymous.

3. PARSIMONIOUS

(a) Prodigious (b) Selfless
(c) Extravagant (d) Ostentatious

Ans: (c) The word **Parsimonious (Adjective)** means: extremely unwilling to spend money.
The word **Extravagant (Adjective)** means : spending a lot more money than is necessary.

4. PETTER

(a) Restore (b) Liberate
(c) Exonerate (d) Distract

Ans: (b) The word **Fetter (verb)** means : shackle ; to restrict somebody's freedom to do what they want ; to put chains around a prisoner's feet.
The word **Liberate (verb)** means : to free

5. HARMONY

(a) Strife (b) Annoyance
(c) Cruelty (d) Mischief

Ans: (a) The word **Harmony (Noun)** menas : a state of peaceful existence and agreement.
The word Strife means : conflict : discord ; quarrel.

6. Conciliation

(a) dispute (b) irritation
(c) separation (d) confrontation

Ans: (d) Conciliation (Noun) is willingness to end a disagreement or the process of ending a disagreement
For example,
Resolving the dispute will require a mood of concilliation on both sides.
A **confrountation** is a dispute, fight, or battle between two groups of people.
For example,
The issue has caused great tension between the two countries and could lead to a military confrontation.

7. Myth

(a) truth (b) fact
(c) falsehood (d) story

Ans: (b) A **myth** is well-known story which was made up in the past to explain natural events or to justify religious beliefs or social customs. If you describe a belief or explanation as a **myth,** you mean that many people believe it but it is actually untrue.

8. Reluctantly

(a) pleasingly (b) willinghy
(c) satisfactorily (d) happily

Ans: (b) If you are reluctant to do something you are unwilling to do it and hesitate before doing it, or do it slowly and without enthusiasm.
For example,
We have **reluctantly** agreed to let him go.
So, **reluctantly** means unwillingly, Therefore the correct antonym is **willingly.**

9. Mutilate

(a) pleasingly (b) induct
(c) conduct (d) mend

Ans: (d) If a person or animal is **mutilated** their body is severly damaged, usually by someone who physically attacks them.
For example,
He tortured and mutilated six young men.
Mend is the only word, among the given options which is most nearly opposite in meaning to the word **mutilated.**

10. Lament

(a) rejoice (b) rejuvenate
(c) complain (d) cry

Ans: (a) The word **Lament (verb)** means : to fell or express great sadness or disappointment : bemoan, bewall, deplore. The word Rejoice (verb) means : to express great happiness about something.

11. ANINOSITY

(a) Love (b) lust
(c) luck (d) loss

Ans: (a) The word **Animosity (Noun)** means : astrong feeling of opposition, anger or hatred; hostility. The word Love (Noun) means : a strong feeling of deep affection: enjoyment ; friendliness.

12. ALTERCATION

(a) explanation (b) challenge
(c) compromise (d) opposition

Ans: (c) The word **Altercation (Noun)** means : An agreement made between two people or groups

13. COAX

(a) dull (b) dissuade
(c) active (d) speed

Ans: (b) The word **coax (verb)** means : to persuade somebody to do something ; cajole; to entice,